GLOBAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY STUDIES UGC APPROVED ISSN: - 2348-0459
www.gjms.co.in
Volume-6, Issue-8, July 2017 Impact Factor: 3.987

Paper ID: UGC 48846-932

"राजस्थान राज्य के गुर्जर विद्यार्थियों की उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक स्थिति (शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति) का विश्लेषणात्मक अध्ययन"

डॉ. अनिल कुमार
अध्यापक, रा.उ.प्रा.वि. चॉदपुर, अलवर (राज.)

अरूणा कुमारी
अध्यापिका, रा.उ.मा.वि. वामनवास, जयपुर (राज.)

सारांश किसी राष्ट्र, समाज, व्यक्ति के उन्नयन का मूलाधार शिक्षा मानी जाती है। बालक शिक्षा का आधार बिन्दु है। उसकी शिक्षा उसके अनुरूप होनी चाहिए। राजस्थान के गुर्जर समाज का मुख्य व्यवसाय पशु चारण एवं अल्प कृषि है। गुर्जर समाज में साक्षरता की दर राज्य के औसत से बहुत ही कम है। जीवन में सफलता तथा चरित्र निर्माण के लिए, संस्कृति को बनाये रखने के लिए, शिक्षा की कमी को सब बुराईयों का कारण मानने में, अच्छा नागरिक बनने में शिक्षा को आवश्यक मानते हैं।

शब्दकोश गुर्जर विद्यार्थी, शिक्षा ,के प्रति अभिवृत्ति, गुणों, आदर्शों, कौशला, विधाआ

प्रस्तावना

किसी राष्ट्र, समाज, व्यक्ति के उन्नयन का मूलाधार शिक्षा मानी जाती है। यही कारण है कि ज्ञानार्जन की एक क्रिया के रूप म अत्यन्त प्राचीन काल से अविरल शिक्षा गतिशील बनी हुई है। शिक्षा से समाज और संस्कृति को स्वरूप की प्राप्ति होती है तो शिक्षा का आश्रय लेकर राष्ट्र उत्पादनशील और आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर होता है। आर्थिक विकास म मजबूती आने से प्रजातांत्रिक मूल्या की रक्षा सम्भव होती है। जहाँ तक व्यक्ति अथवा मानव जाति के उन्नयन की बात है तो इस परिप्रेक्ष्य में शिक्षा को मानव जीवन का शाश्वत मूल्य कहा जाता है। शाश्वत मूल्यों से आशय ऐसे गुणों, आदर्शों, कौशला, विधाआ, तकनीका से लगाया जा सकता ह जिसको ग्रहण करके मनुष्य अपने जीवन को नियंत्रित, निर्देशित, परिमार्जित करके आजीवन विकास पथ का वरण करके आनन्दानुभूति करने म समर्थ होता है। चूँकि शिक्षा अत्यन्त प्राचीन काल से मानव जाति को विविध गुणा, आदर्शों, कौशला से सम्पृक्त कर रही है, यह अविरल तथा सदैव गतिमान रहती है और जब तक मानव का जीवन रहता है तब तक दिशा–निर्देश देकर जीवन को नियंत्रित व निर्देशित करती है। इस कारण जीवन के शाश्वत मूल्य के रूप म शिक्षा को आदरणीय स्थान प्राप्त है।

आज के युग म इस बात को माना जाने लगा है कि बालक शिक्षा का आधार बिन्दु है। उसकी शिक्षा उसके अनुरूप होनी चाहिए। बालक को क्या करना चाहिए, क्या करना चाहिए, यदि वह अपनी योग्यता तथा क्षमता के अनुरूप कार्य नहीं करता तो उसका क्या परिणाम होगा आदि प्रश्न ऐसे हैं जो उसकी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के वैभिन्नय को प्रकट करत हैं।

अन्य राज्या की तुलना म हमारे राज्य राजस्थान म शिक्षा का स्तर ज्यादा गिरा है। योजना आयोग की रिपोर्ट के अनुसार शिक्षा की गुणवत्ता पर खर्च के मामले म राजस्थान की स्थिति कई पिछड़े राज्या से भी बदत्तर है।

राजस्थान सरकार ने भी अपने जिला कलेक्टर्स से अगस्त, 2005 में प्रदेश के गुर्जर समुदाय के सामाजिक आर्थिक स्तर परीक्षण रिपोर्ट तैयार करवायी (सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता तथा समाज कल्याण विभाग, राजस्थान सरकार – 2007), जिसमें गुर्जर समुदाय की स्थिति विशेष चिंतनीय बतायी गई है।

समस्या अभिकथन –

"राजस्थान राज्य के गुर्जर विद्यार्थियों की उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक स्थिति (शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति) का विश्लेषणात्मक अध्ययन।"

अध्ययन के उद्देश्य –

1. राजस्थान राज्य के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत गुर्जर विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

Paper ID: UGC 48846-932

2. राजस्थान राज्य के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत गुर्जर छात्र–छात्राओं की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

अनुसंधान विधि –

शोधकर्ता ने अपने शोध कार्य के लिये सर्वेक्षण विधि को आधार बनाया है।

चर –

1.**स्वतन्त्र चर** – गुर्जर विद्यार्थियों की उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति।

न्यादर्श –

न्यादर्श के रूप म राजस्थान राज्य के उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालया में अध्ययनरत कक्षा 11 एवं 12 के 600 गुर्जर विद्यार्थिया {300 ग्रामीण गुर्जर विद्यार्थियों (150 छात्र + 150 छात्रा) + 300 शहरी गुर्जर विद्यार्थियों (150 छात्र + 150 छात्रा)}, का चयन किया गया है।

प्रयुक्त उपकरण –

अध्ययन म प्रयुक्त उपकरण निम्न हैं –

1.शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति ज्ञात करने हेतु – डॉ. एस.एल. चोपड़ा द्वारा निर्मित शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकी –

अध्ययन से संबंधित परीक्षणा का विधिवत् प्रशासन करके विश्लेषण किया गया है। अध्ययन म प्रयुक्त की जाने वाली सांख्यिकी मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं टी–परीक्षण है।

अध्ययन में प्रयुक्त परिकल्पनाएँ –

परिकल्पना – 1

राजस्थान राज्य के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत गुर्जर विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।

स्मूह	संख्या (N)	मध्यमान ($\overline{X}$)	प्रमाप विचलन (σ)	टी–मूल्य (t)	सार्थकता स्तर
ग्रामीण गुर्जर विद्यार्थी	300	16.24	4.822	0.930	स्वीकृत
शहरी गुर्जर विद्यार्थी	300	16.94	3.984		

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि जीवन में सफलता तथा चरित्र निर्माण के लिए शिक्षा को महत्त्वपूर्ण मानने में, भारतीय संस्कृति को बनाये रखने के लिए शिक्षा को प्राथमिकता देने में, शिक्षा की कमी को सब बुराईयों का कारण मानने में, पढ़ाई के लिए अधिक चिन्ता नहीं करने में, अच्छा नागरिक बनने में शिक्षा को आवश्यक मानने में तथा शिक्षा की कमी ही सब बुराईयों का कारण आदि शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति संबंधी तथ्यों में दोनों समूह के विद्यार्थियों के विचारा में समानता पाई जाती है।

परिकल्पना – 2

राजस्थान राज्य के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण क्षेत्र के गुर्जर छात्र–छात्राओं की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।

स्मूह	संख्या (N)	मध्यमान ($\overline{X}$)	प्रमाप विचलन (σ)	टी–मूल्य (t)	सार्थकता स्तर
ग्रामीण गुर्जर छात्र	150	14.74	3.88	0.89	स्वीकृत
ग्रामीण गुर्जर छात्राएँ	150	15.22	4.224		

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि जीवन में सफलता तथा चरित्र निर्माण के लिए शिक्षा को महत्त्वपूर्ण मानने में, भारतीय संस्कृति को बनाये रखने के लिए शिक्षा को प्राथमिकता देने में, शिक्षा की कमी को सब बुराईयों का कारण मानने में, पढ़ाई के लिए अधिक चिन्ता नहीं करने में, अच्छा नागरिक बनने में शिक्षा को आवश्यक मानने में तथा शिक्षा की कमी ही सब बुराईयों का कारण आदि शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति संबंधी तथ्यों में दोनों समूह के छात्र–छात्राओं के विचारों में समानता पाई जाती है।

Paper ID: UGC 48846-932

परिकल्पना – 3

राजस्थान राज्य के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी क्षेत्र के गुर्जर छात्र–छात्राओं की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।

स्मूह	संख्या (N)	मध्यमान ($\overline{X}$)	प्रमाप विचलन (σ)	टी–मूल्य (t)	सार्थकता स्तर
शहरी गुर्जर छात्र	150	18.94	3.45	0.98	स्वीकृत
शहरी गुर्जर छात्राएँ	150	19.39	2.58		

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि जीवन में सफलता तथा चरित्र निर्माण के लिए शिक्षा को महत्त्वपूर्ण मानने में, भारतीय संस्कृति को बनाये रखने के लिए शिक्षा को प्राथमिकता देने में, शिक्षा की कमी को सब बुराईयों का कारण मानने में, पढ़ाई के लिए अधिक चिन्ता नहीं करने में, अच्छा नागरिक बनने में शिक्षा को आवश्यक मानने में तथा शिक्षा की कमी ही सब बुराईयों का कारण आदि शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति संबंधी तथ्यों में दोनों समूह के छात्र–छात्राओं के विचारों में समानता पाइ जाती है।

शैक्षिक निहितार्थ –

- एक ही विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक स्थिति में अन्तर होता है। विद्यार्थी शोध परिणामों को देखकर अपनी योग्यता का वास्तविक मूल्यांकन कर अपनी शैक्षिक स्थिति का निर्धारण कर लक्ष्य तक पहुँचने के लिये अनवरत कार्य करेंगे।
- विद्यार्थी कक्षा–कक्ष में शिक्षक से अन्तःक्रिया पर जोर देंगे जिससे विद्यार्थियों में चिंतन, निर्णय, तार्किक क्षमता का विकास हो, साथ ही झिझक भी दूर हटे और उनकी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में विकास हो सके।
- विद्यार्थियों की अध्ययन संबंधी उपलब्धि परिवार व अभिभावकों के दृष्टिकोण से प्रभावित होती हैं। यदि अभिभावक इस प्रकार के शोधकार्यों के सम्पर्क में आते हैं तो वे स्वयं तथा पारिवारिक वातावरण के द्वारा विद्यार्थियों के अधिगम पर पड़ने वाले प्रभावों को जान सकेंगे तथा शैक्षिक अभिवृत्ति को विकसित कर सकेंगे।
- अभिभावक अपने बच्चों में लिंग भेद के आधार पर अन्तर न करें तथा उनकी समस्याओं को समझें तथा उन्हें दूर करने का यथासंभव प्रयास कर अभिप्रेरित करें, साथ ही उनकी योग्यता के आधार पर शैक्षिक स्थिति का निर्धारण कर विषय चयन, व्यवसाय में यथासंभव सहायता करें।
- शिक्षक सभी विद्यार्थियों में जिज्ञासा उत्पन्न कर उन्हें संतुष्ट करें एवं आवश्यकतानुसार शिक्षण विधियों का प्रयोग करें ताकि उनकी शैक्षिक अभिवृत्ति विकसित हो सके। शिक्षक विद्यार्थियों के आदर्श होते हैं, अतः शिक्षक को उच्च व्यक्तित्त्व का धनी होना चाहिए। विद्यालय प्रबन्ध के अन्तर्गत विद्यालय में उच्च शैक्षिक योग्यता, उच्च व्यक्तित्त्व के धनी एवं चरित्रवान शिक्षक रखें तथा उनकी आवश्यकताओं पर ध्यान रखें जिससे शिक्षक समर्पण की भावना से कार्य करें।
- पाठ्यक्रम निर्माताओं को विद्यार्थियों की शैक्षिक स्थिति को विकसित करने के लिये उचित विषयों को लागू करना चाहिए तथा पाठ्यक्रम में चिंतन, मानसिक, तार्किक क्षमता तथा शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति विकसित करने वाली विषयवस्तु को समाहित किया जाना चाहिए।

निष्कष – अन्य समाज की तुलना में गुर्जर समाज में न्यूनतम शैक्षणिक स्तर निम्न स्तर का रहन–सहन, गरीबी, स्त्री शिक्षा का विशेष अभाव, बाल विवाह, जादू टोने–टोटके, अंधविश्वास इत्यादि आज भी जीवंत हैं और पूरा समाज इनमें जकड़ा हुआ है। बाल–विवाह एवं मृत्यु भोज तथा नाता प्रथा जैसी कुप्रथाओं में अपनी हैसियत से अधिक खर्च करने के कारण पीढ़ी दर पोढ़ी कर्ज के बोझ से दबे रहते हैं। शोधकर्त्ता द्वारा राजस्थान राज्य के इतिहास एवं सामाजिक परिस्थितियों का अध्ययन करने पर पाया गया कि राजस्थान के गुर्जर समाज का मुख्य व्यवसाय पशु चारण एवं अल्प कृषि है। गुर्जर समाज में साक्षरता की दर राज्य के औसत से बहुत ही कम है।

Paper ID: UGC 48846-932

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1– आर्य, हरिशरण (2000) :मनोवैज्ञानिक परिभाषा कोष, शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार

2– चौहान, एस.एस. (1987) :,डवान्स्ड ,ज्यूकेशनल साइकोलोजी, वाणी , एज्यूकेशन बुक्स, न्यू देहली

3– चौबे, सरयू प्रसाद (1990): शिक्षा के दार्शनिक, ऐतिहासिक और समाजशास्त्रीय आधार, इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ

4– गप्ता, रामबाबू (1995) :भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ, रतन प्रकाशन मंदिर, प्रोफेसर कॉलोनी, दिल्ली गेट, आगरा

5– गर्जर, आर–के– (1999) : गुर्जर क्षत्रियsa की उत्पत्ति एवं गुर्जर प्रतिहार साम्राज्य, साहित्य विद्या मंदिर, जयपुर

6– गप्ता, नत्थलाल (1986) : मानव मूल्यsa की खोज, विश्व भारती प्रकाशन, सीताबाड़ी, नागपुर 7– गप्ता, ,च–पी– (2005):आधुनिक मापन ,वं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद

8– कपिल, ,च–के– (2005) : अनुसंधान विधियाँ, हरप्रसाद भार्गव, आगरा

9– नागर, के–,न– (2009–10): सांख्यिकी के मूल तत्त्व, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ

10– श्रीवास्तव, के–सी– (2000):प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, यूनाइटेड बुक डिपो, इलाहाबाद

11–चौपड़ा, ,स–,ल–:मैनुअल ऑफ ,टीट्यूड स्केल टूवार्ड्स ,ज्यूकेशन, नेशनल साइकोलोजिकल कारपोरेशन, आगरा

*****